# तौबा

# तौबा

*tauba*

Repentance
(Urdu—Hindi script)

© 2019 MIK
*published and printed by*
Good Word, New Delhi

*for enquiries or to request more copies:*
askandanswer786@gmail.com

## तौबा का मतलब : पलटना

फ़रज़ करें कोई सफ़र करना चाहता है। वह अड्डे पर टिकट ख़रीदकर बस में बैठ जाता है। लेकिन बस के चलने से चंद लमहे पहले वह अपना इरादा बदलकर बस से उतर आता है। ड्रायवर कहता है, "अरे, बस चलनेवाली है। कहाँ जा रहे हो?"

वह आदमी जवाब देता है, "मैं नहीं जाऊँगा। अपने घर वापस जा रहा हूँ।"

घर के लोग उसे वापस आते देखकर बड़े हैरान हो जाते हैं। अब एक घंटा भी न हुआ वह उन्हें अलविदा कहकर गया था।

उस आदमी ने क्या किया? उसने अपना इरादा बदल लिया जिससे उसकी सिम्त भी बदल गई। वह अपने घर पलट गया। यही तौबा का मफ़हूम है यानी पलटना। जब कोई ग़लत रास्ते पर

जा रहा हो और अपना इरादा बदलकर सहीह रास्ते पर चलने लगे तो हम कहते हैं कि उसने तौबा की है।

लेकिन हमें कौन-सा ग़लत रास्ता तर्क करना और कौन-सा दुरुस्त रास्ते को चुनना है? ग़लत रास्ता अल्लाह की नाफ़रमानी है जब कि दुरुस्त रास्ता ख़ुदा की फ़रमाँबरदारी है। जब कोई हक़ तआला के अहकाम की ख़िलाफ़वरज़ी करता है तो वह अल्लाह की तरफ़ से मुँह फेर लेता है। वह उससे दूर होकर इबलीस की सिम्त चलने लगता है। लेकिन जब वह अपने बुरे कामों से नफ़रत करके वापस पलटता है तो फिर वह एक ऐसे रास्ते पर चलने लगता है जो उसे रोज़ बरोज़ अल्लाह के ज़्यादा क़रीब लेता जाता है।

## सबने गुनाह किया है

यह एक कड़वी हक़ीक़त है कि हज़रत ईसा के सिवा हर इनसान ने अल्लाह तआला की नाफ़रमानी की है। इंजील जलील फ़रमाती है कि

> सबने गुनाह किया, सब अल्लाह के उस जलाल से महरूम हैं जिसका वह तक़ाज़ा करता है।
> (इंजील शरीफ़, रोमियों 3:23)

तमाम इनसानी नसल ग़लत सिम्त की तरफ़ जा रही है। लोग जितना अल्लाह की नाफ़रमानी करते हैं उतना ही उससे दूर होते जाते हैं। जिस रास्ते पर चल रहे हैं वह उन्हें हलाकत और अबदी मौत की तरफ़ ले जा रहा है।

## अल्लाह की आरज़ू : वापस आओ

बारी तआला ने इस ख़तरे से आगाह करने के लिए अपने पैग़ंबरों को भेजा ताकि हम इस रास्ते से पलटकर उसके पास वापस आ जाएँ। जब हज़रत यहया को भेजा गया तो उनका पैग़ाम यह था कि

> तौबा करो, क्योंकि आसमान की बादशाही क़रीब आ गई है। (इंजील शरीफ़, मत्ती 3:2)

और जब हज़रत ईसा को भेजा गया तो आपने भी यही तालीम दी।[1] अल्लाह को इस बात से बड़ा दुख होता है कि इनसान उसे तर्क करके हलाकत की तरफ़ बढ़ रहा है। उसकी आरज़ू तो यही है कि सब तौबा करके उसके पास वापस आ जाएँ।[2]

---

[1] इंजील शरीफ़, मत्ती 4:17
[2] इंजील शरीफ़, 2 पतरस 3:9

इस सच्चाई को वाज़िह करने के लिए हज़रत ईसा ने एक तमसील पेश की : एक आदमी ने अपने बेटे को अंगूरों के बाग़ में जाकर काम करने को कहा। लड़के ने इनकार करके कहा कि मैं नहीं जाऊँगा। लेकिन बाद में उसने अपना इरादा बदल दिया और बाग़ में जाकर काम करने लगा।[1] बेशक बाप यह देखकर ख़ुश हुआ होगा कि मेरे बेटे ने नाफ़रमानी से तौबा करके फ़रमाँबरदारी के रास्ते को इख़्तियार किया। इसी तरह अल्लाह की भी यही आरज़ू है कि उसके नाफ़रमान बच्चे तौबा करके उसका हुक्म मानें।

हज़रत ईसा ने एक और तमसील पेश की : एक बाप के दो बेटे थे। बड़ा लड़का अपने बाप के खेतों में काम करता था, लेकिन छोटा लड़का अपने बाप की फ़रमाँबरदारी और ख़िदमत नहीं करना चाहता था। उसने अपने बाप से जायदाद में से अपने हिस्से का मुतालबा किया और रुपया लेकर अपने बाप से बहुत दूर किसी गैरमुल्क में चला गया। वहाँ उसने अपना तमाम माल उड़ा दिया। जब भूक के हाथों तंग हो गया तो वह किसी के सूअर चराने लगा। उसे उन फलियों को खाने की भी इजाज़त न मिली जो सूअर खाते थे। तब वह होश में आया। वह कहने लगा कि मेरे बाप के मज़दूरों को ख़ूब खाना मिलता है जब कि मैं भूका मर रहा हूँ। बाप का प्यार भी याद आया होगा।

[1] इंजील शरीफ़, मत्ती 21:29

अब उसकी आँखें खुल गईं और उसने शिद्दत से अपनी बेवुक़ूफी को महसूस किया। उसे इसका एहसास हुआ कि मैंने अपने बाप का गुनाह किया है। अब वह अपने बाप की नाफ़रमानी करने और उससे दूर जाने की बजाए अपने बाप का फ़रमाँबरदार नौकर बनने का ख़्वाहिशमंद हुआ। अब वह अपने घर से दूर नहीं रहना चाहता था। एक दिन वह उठा और सूअरों और अपनी गंदी ज़िंदगी को छोड़कर अपने बाप के घर पलट आया। दूसरे लफ़्ज़ों में उसने तौबा की।

जब वह अपने घर के नज़दीक पहुँचा तो उसके बाप ने उसे आते देख लिया। वह ख़ुशी से बेताब होकर अपने बेटे को मिलने दौड़ा, उसे गले लगाया और ख़ूब भींच भींचकर प्यार किया। बेटे ने कहा,

> ऐ बाप, मैंने आसमान का और आपका गुनाह किया है। अब मैं इस लायक़ नहीं रहा कि आपका बेटा कहलाऊँ। (इंजील शरीफ़, लूक़ा 15:21)

लेकिन बाप ने उसे माफ़ करके क़बूल किया और उसके एज़ाज़ में ज़ियाफ़त का इंतज़ाम किया। उसने कहा,

> यह मेरा बेटा मुर्दा था अब ज़िंदा हो गया है, गुम हो गया था अब मिल गया है।
> (इंजील शरीफ़, लूक़ा 15:24)

इस तमसील में बाप से मुराद अल्लाह तआला है। बेटे से मुराद तमाम इनसान हैं। क्योंकि तमाम आदमी अपनी ख़ुशी पूरी करना और अपनी ही मरज़ी पर चलना चाहते हैं। वह अल्लाह के फ़रमान के मुताबिक़ ज़िंदगी बसर नहीं करते। बाज़ चोर, डाको, ज़िनाकार और क़ातिल बन गए हैं। दीगर अल्लाह की निसबत दौलत और ऐशो-इशरत को ज़्यादा प्यार करते हैं। बाक़ी अपने दिलों में हसद और तकब्बुर रखते हैं और अपने पड़ोसियों को प्यार नहीं करते। हमारे गुनाह कैसे ही क्यों न हों, हम सब इस तमसील के बेटे की मानिंद हैं। सब अल्लाह से दूर चले गए हैं। लेकिन अल्लाह तआला चाहता है कि हम तौबा करें और उसके पास वापस आ जाएँ। ख़्वाह हमारे गुनाह कितने ही बड़े क्यों न हों, वह तौबा करनेवालों को माफ़ करने के लिए तैयार रहता है।

जब कोई गुनाह करता है तो वह सबसे पहले बारी तआला का गुनाह करता है और इसके बाद अपने हमजिंस इनसान का भी। इसलिए हमें सबसे पहले उस रहीमो-ग़फ़ूर के सामने तौबा करनी चाहिए। उस बेटे ने अपने बाप और अपने भाई से बहुत ज़्यादती की थी। लेकिन फिर उसने अपने बाप के पास वापस

आकर तसलीम किया कि मैं गुनाहगार हूँ। इसी तरह जब हज़रत दाऊद ने एक आदमी और उसकी बीवी के ख़िलाफ़ बदी की थी तो उन्होंने अल्लाह से दुआ की,

> मैंने तेरे, सिर्फ़ तेरे ही ख़िलाफ़ गुनाह किया, मैंने वह कुछ किया जो तेरी नज़र में बुरा है।
> (ज़बूर शरीफ़ 51:4)

## हक़ीक़ी तौबा क्या है?

मुमकिन है कि कोई चोर अपने आपसे कहे, "चोरी करने का क्या फ़ायदा। अब मैं तौबा करता हूँ। अब मैं हलाल की कमाई से गुज़र-औक़ात किया करूँगा।" या कोई शराबी महसूस करे कि शराब उसकी सेहत को तबाह कर रही है और कहे, "मैंने शराब से तौबा कर ली है और अब शराबनोशी नहीं करूँगा।"

दोनों आदमियों ने अच्छा किया कि अपनी बुरी आदात को तर्क कर दिया। लेकिन यह उस क़िस्म की तौबा नहीं है जिसका ज़िक्र हम यहाँ कर रहे हैं। गो उन्होंने चोरी और शराब तर्क कर दी है, तो भी ऐन मुमकिन है कि अब तक वह ख़ुदा से दूर होते जाते हों। उनकी तौबा उस वक़्त तक हक़ीक़ी तौबा नहीं हो सकती जब तक कि वह उस राह से जो उन्हें अल्लाह से दूर ले जाती है पलटते नहीं

और ख़ुदा से माफ़ी माँगकर उसके पास वापस नहीं आते। उन्हें न सिर्फ़ उन कामों की माफ़ी माँगनी है बल्कि इसकी भी कि वह अल्लाह की नाफ़रमानी करते हुए ज़िंदगी गुज़ार रहे थे।

जो हक़ीक़ी तौबा करे वह अपनी बुरी ज़िंदगी से नफ़रत करके उसे तर्क कर देता है। एक मरतबा एक नौकर चोरी करते पकड़ा गया तो वह अपने मालिक के क़दमों में गिर पड़ा और रो रोकर फ़रयाद करने लगा, "मैं तौबा करता हूँ, मैं तौबा करता हूँ।" इस नौकर को डर था कि वह नौकरी से हाथ धो बैठेगा। लेकिन क्या वह अपने रवैये से नफ़रत करके उसे रद्द करने को तैयार था? अगर वह पकड़ा न जाता तो क्या वह अपने मालिक के पास आकर कहता कि "मैं तौबा करता हूँ, मैं तौबा करता हूँ"? जब कोई हक़ीक़ी तौर पर अपने गुनाहों के बाइस पशेमान हो तो वह ख़ुदाए-जुलजलाल के सामने इनका इक़रार करके तौबा करेगा, ख़्वाह लोग उसके गुनाहों को जानते हों या न।

जब लोग हज़रत यहया नबी के पास तौबा करने के लिए आए तो उन्होंने कहा,

> अपनी ज़िंदगी से ज़ाहिर करो कि तुमने वाक़ई तौबा की है। (मत्ती 3:8)

मतलब है कि तुम्हारा चाल-चलन और तर्ज़े-ज़िंदगी तबदील हो। जब कोई इबलीस के हाथ में होता है तो वह रोज़ बरोज़ उसकी

मानिंद बनता जाता है। जब वह तौबा करके अपनी बुरी रविश से बाज़ आता और अल्लाह की तरफ़ फिरता है तो वह रोज़ बरोज़ ख़ुदा की मानिंद पाक बनता जाता है। ग़रज़, अगर कोई कहे कि मैंने तौबा की है लेकिन बेहतर इनसान न बने तो उसने हक़ीक़ी तौबा नहीं की और अपने ख़ालिक़ की तरफ़ नहीं फिरा है।

जिसने हक़ीक़ी तौबा की है, अल्लाह उसे गुनाहों से नफ़रत करना सिखाता है। वह उन्हें वैसे ही रद्द करता है जैसे कोई अपने घर से ज़हरीले साँप को निकाल बाहर फैंक देता है। जिस चोर ने हक़ीक़ी तौबा की हो वह फिर चोरी करने का ख़्वाहिशमंद नहीं होगा, ख़्वाह उसे मौक़ा मिले या न मिले। झूट बोलनेवाला सच बोलेगा। मुतकब्बिर हलीम बन जाएगा। जो अपने पड़ोसी से नफ़रत करता है वह उसके साथ मेहरबानी से पेश आएगा। जिसने ख़ुदा का हुक्म न माना वह उसका फ़रमाँबरदार ख़ादिम बन जाएगा। जो भी हक़ीक़ी तौर पर अल्लाह के सामने तौबा करे उसे माफ़ी मिलकर नई पैदाइश का तजरबा हासिल होता है, और वह नया मख़लूक़ बन जाता है।

# आज़माइश का किस तरह सामना करें?

तौबा करने के बाद भी हमसे गुनाह सरज़द होते हैं। हम सबको इस बात का इक़रार करना है कि जो हमारा फ़रज़ था वह हमने नहीं किया और जो काम अच्छा न था वह हमने किया है। हज़रत ईसा जानते थे कि जो तौबा करके उन पर ईमान लाएँगे फ़ौरन ही कामिल नहीं बन जाएँगे। आप जानते थे कि जब तक आपके पैरोकार इस जहान में हैं उन पर गुनाह की आज़माइश आएगी, और बाज़ औक़ात वह गुनाह में गिर भी जाएँगे। इसी लिए आपने उन्हें इस तरह दुआ करने की तलक़ीन की,

> हमारे गुनाहों को माफ़ कर जिस तरह हमने उन्हें माफ़ किया जिन्होंने हमारा गुनाह किया है। और हमें आज़माइश में न पड़ने दे।
> (इंजील शरीफ़, मत्ती 6:12-13)

जब भी कोई महसूस करे कि उसने हक़ तआला की नाफ़रमानी की है, वह फ़ौरन ही उसके सामने इसका इक़रार करे, माफ़ी माँगे और मदद की दरख़ास्त करे कि वह फिर इस गुनाह में फंस न जाए।

# कभी न कभी मुआवज़े की ज़रूरत

बाज़ औक़ात यह काफ़ी नहीं कि हम किसी से माफ़ी माँगें। बाज़ औक़ात लाज़िम है कि हम नुक़सान का मुआवज़ा भी अदा करें अगर मुमकिन हो।

एक दिन हज़रत ईसा एक आदमी के घर गए जिसका नाम ज़क्काई था। यह शख़्स लोगों से टैक्स लेकर अकसर ज़्यादती करता था। इस तरह वह बहुत दौलतमंद बन गया था। लेकिन दौलत उसे ख़ुशी न दिला सकी। जब हज़रत ईसा उसके घर गए तो उसने तौबा की और अपने गुनाहों से मुँह मोड़कर अल्लाह की तरफ़ फिरा। तब उसने कहा,

> ख़ुदावंद, मैं अपने माल का आधा हिस्सा ग़रीबों को दे देता हूँ। और जिससे मैंने नाजायज़ तौर से कुछ लिया है उसे चार गुना वापस करता हूँ।
> (इंजील शरीफ़, लूक़ा 19:8)

इस तरह ज़क्काई ने ज़ाहिर किया कि उसने हक़ीक़ी तौबा की है।

# रूहुल-क़ुद्स की मदद

कौन लोगों को तौबा करने और अल्लाह की तरफ़ फिरने पर उकसाता है? अल्लाह तआला का पाक रूह ही यह काम करता है। गुनाहगार इस क़ाबिल नहीं है कि ख़ुद बख़ुद अपनी बुरी हरकतों से बाज़ आकर अपने आपको अपने ख़ालिक़ के सुपुर्द कर दे। लेकिन ख़ुदा अपने पाक रूह के वसीले से गुनाहगारों की आँखें खोल देता है ताकि उन्हें अपने गुनाहों का एहसास हो और वह अपने गुनाहों पर पछताएँ। हज़रत ईसा ने अपने शागिर्दों को बताया कि जब आप सऊद फ़रमा जाएँगे तो आप पाक रूह को भेजेंगे।

और ऐसा ही हुआ। सऊद के दस दिन बाद आपने अपने पैरोकारों को रूह से मामूर कर दिया। तब आपके एक शागिर्द बनाम पतरस ने रूह की क़ुदरत से मामूर होकर एक हुजूम से ख़िताब किया। उन्होंने बताया कि जब तुमने हज़रत ईसा को रद्द किया और सलीब दी तो तुमने अल्लाह का बड़ा भारी गुनाह किया। इस पैग़ाम से मुतअस्सिर होकर लोगों ने पूछा कि हम क्या करें? पतरस ने जवाब दिया,

> आप में से हर एक तौबा करके ईसा के नाम पर बपतिस्मा ले ताकि आपके गुनाह माफ़ कर दिए जाएँ। (इंजील शरीफ़, आमाल 2:38)

उसी वक़्त तीन हज़ार अफ़राद तौबा करके हुज़ूर अल-मसीह पर ईमान लाए और बपतिस्मा लिया। किसने उन्हें अल्लाह के रूहानी फ़रज़ंद बना दिया? रूहुल-क़ुद्स ही ने पतरस के पैग़ाम के ज़रीए लोगों को उनके गुनाहों से क़ायल किया और उनकी नौबत तौबा तक लाया।

## माफ़ी का यक़ीन

लेकिन फ़रज़ करें कि हमने बहुत सख़्त गुनाह किए हों। हमें इस बात का यक़ीन कैसे हो सकता है कि अल्लाह हमारी तौबा क़बूल करके हमें माफ़ कर देगा? अगर हमारे गुनाह इतने ज़्यादा हों तो क्या यह हो सकता है कि वह हमें कभी माफ़ न करे?

इंजील जलील इसका साफ़ जवाब देती है : हज़रत ईसा ने गुनाहगारों के लिए अपनी जान दी। यह अज़ीम काम हर गुनाह को मिटाने के लिए काफ़ी है, चाहे वह बड़ा हो या छोटा। अल्लाह तआला ने वादा किया कि जो लोग तौबा करके हज़रत ईसा पर ईमान लाएँगे उन्हें वह माफ़ करके क़बूल कर लेगा। हज़रत ईसा पर ईमान लानेवालों से इंजील शरीफ़ फ़रमाती है,

> अगर हम अपने गुनाहों का इक़रार करें तो वह वफ़ादार और रास्त साबित होगा। वह हमारे गुनाहों को माफ़ करके हमें तमाम नारास्ती से पाक-साफ़ करेगा। (इंजील जलील, 1 यूहन्ना 1:9)

और

> अल्लाह ने दुनिया से इतनी मुहब्बत रखी कि उसने अपने इक्लौते फ़रज़ंद को बख़्श दिया, ताकि जो भी उस पर ईमान लाए हलाक न हो बल्कि अबदी ज़िंदगी पाए। (इंजील शरीफ़, यूहन्ना 3:16)

ग़रज़, हम पूरा यक़ीन रख सकते हैं कि अगर हम तौबा करें और हज़रत ईसा पर ईमान लाएँ तो हमारे गुनाह बख़्श दिए जाएँगे।